हाथी के दांत

एक नेता दहेज विरोधी सम्मेलन में चिल्ला रहे थे,
दहेज को 'एड्स' की तरह एक सामाजिक बीमारी बता रहे थे।
नौजवानों को घड़ियाली आंसुओं से उकसा रहे थे,
बिना दहेज शादी के लिए हस्ताक्षर करवा रहे थे।

शाम को सेठ करोड़ीमल के यहां जाते हैं,
अपने बेटे की शादी एक करोड़ में तय कर आते हैं।
बेटा बोला पिताजी, शर्म आनी चाहिए आपको,
दिन में विरोध करते हो, रात को एक करोड़ की बात करते हो।

बेटे की बात सुनकर नेता हौले से मुस्कराया,
बोला, नेताओं की बातें हाथी के दांतों जैसी होती हैं,
उन पर अमल तो सिर्फ जनता करती है।
दिन में हम एकता की बातें करते हैं,
रात को सम्प्रदायों को लड़ाने की साजिशें रचते हैं।
अगर जो कहते हैं वही करने लग जायेंगे,
तो बेटाजी, हर महीने आपके लिए नई मारूति कहां से लायेंगे?

राहुल कुमार जैसवाल, वरिष्ठ शोध सहायक
गंगा मैदानीय क्षेत्रीय केन्द्र, पटना